अखिल विश्व गायत्री–परिवार, कानपुर द्वारा आयोजित 'राष्ट्र जागरण दीप महायज्ञ' में महामहिम राज्यपाल, श्री रामनाथ कोविन्द का संबोधन (दिनांक–23.10.2016, समय– 6:00 बजे अपराह्न)

अखिल विश्व गायत्री–परिवार, कानपुर द्वारा आयोजित 'राष्ट्र जागरण दीप महायज्ञ' में प्रमुख रूप से उपस्थित हापुड़ के जिला न्यायाधीश श्री घनश्याम पाठक जी, नगर प्रमुख श्री जगतवीर सिंह द्रोण जी, नेत्र चिकित्सक डॉ॰ अवध दूबे जी, श्री मधुसूदन गोयल जी, श्री विजय पंडित जी, श्री कृष्ण कुमार अग्रवाल जी, दीपयज्ञ के यजमान श्रीमती एवं श्री कमलेश कुमार पाठक, अपर जिला न्यायाधीश, कार्यक्रम के संचालक श्री हरिप्रसाद शुक्ला जी, यज्ञ में उपस्थित गायत्री–परिवार के सभी श्रद्धालु–जन, बुद्धिजीवीगण, मीडिया प्रतिनिधिगण, देवियों एवं सज्जनों!!

महान विद्वान, संत और तपस्वी आचार्य श्रीराम शर्मा जी की महायाज्ञिक प्रज्ञा से सम्पन्न गायत्री–परिवार द्वारा आयोजित ''राष्ट्र जागरण दीप महायज्ञ'' के समारोह में उपस्थित होना मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ। 'राष्ट्र–जागरण–दीप' –यह शब्द जब मैंने सुना, तब मेरे हृदय में कई तरह की भावनाएँ एक साथ आने लगीं। हिन्दी के सुप्रसिद्ध राष्ट्रकवि पं॰ माखनलाल चतुर्वेदी जी की कविता की एक पंक्ति है–''चिर जाग्रत हम कभी सोया नहीं करते।'' उन्होंने लिखा है कि भारतवर्ष चिर जाग्रत राष्ट्र था, है, और सदैव रहेगा। भारतवर्ष पर कितने आक्रमणकारियों ने आकर अपना साम्राज्य स्थापित करने का प्रयास किया। किन्तु, पराधीनता–काल में भी हमारी आत्मा बराबर स्वाधीन बनी रही। अंग्रेजी सल्तनत और उसके पहले भी जितने भी आक्रमणकारी शासक हुए, वे हमारी आत्मा पर कभी विजय नहीं प्राप्त कर सके। हमारी सभ्यता और संस्कृति बराबर अक्षुण्ण बनी रही। यहाँ मैं सुप्रसिद्ध शायर मो॰ इकबाल की पंक्तियों का उल्लेख करना चाहूँगा–

''यूनान–ओ–मिस्र–ओ–रोमा,

सब मिट गए जहाँ से,

अब तक मगर है बाकी

नाम–ओ–निशाँ हमारा।

कुछ बात है कि हस्ती

मिटती नहीं हमारी

सदियों रहा है दुश्मन

दौर–ए–जहाँ हमारा।।''

मुझे लगता है, इकबाल की इन पंक्तियों से भारतीय संस्कृति की विराटता और व्यापकता का हीं परिचय मिलता है।

मित्रों, अपने ही प्रदेश के सुप्रसिद्ध कवि गोपाल दास नीरज जी की एक कविता की कुछ पंक्तियों को उद्धृत करना चाहूँगा–

''दिये से मिटा है न मन का अँधेरा

धरा को उठाओ, गगन को भुकाओ।

बहुत बार आई गई यह दीवाली

मगर तम जहाँ था वहीं पर खड़ा है।

सृजन शांति के वास्ते है जरूरी

कि हर द्वार पर रोशनी गीत गाये।

तभी मुक्ति का यज्ञ यह पूर्ण होगा

कि जब प्यार तलवार से जीत जाए।

x x x x

दिये से मिटा है न मन का अँधेरा,

धरा को उठाओ गगन को झुकाओ,

सभी रो रहे आँसुओं को हँसाओ।।

—नीरज जी की इन पंक्तियों में ही हमारे 'राष्ट्र जागरण दीप महायज्ञ' का वास्तविक उद्देश्य समाहित है। हम आज जो 'राष्ट्र—जागरण दीप' प्रज्वलित कर रहे हैं, उसका उद्देश्य सामाजिक समरसता, शांति और भाईचारा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को मजबूती प्रदान करना है, उसे सशक्त बनाना है। सवाल है कि सामाजिक समरसता के लिए जरूरी क्या है? नीरज जी ने समाधान बड़ी ही सुन्दर पंक्तियों के माध्यम से प्रतीकात्मक रूप से सुझाया है। वे कहते हैं—'धरा को उठाओं, गगन को झुकाओ।' अर्थात् समाज के जो गरीब हैं, जो युगों से अभिवंचित है, उन्हें समाज में उठाया जाय, उनकी हालत सुधारी जाय और जो आसमान बने सारी सुख—सुविधाएँ भोग रहे हैं, उन्हें झुकाया जाय, अर्थात् उनमें अभावग्रस्त लोगों के प्रति संवेदना पैदा की जाय। राष्ट्र के प्रखर चिंतक व मनीषी स्व॰ दीनदयाल उपाध्याय जी का 'एकात्म मानववाद' भी इसी विचार का पोषक है, जिसके माध्यम से समाज में 'अंत्योदय' की परिकल्पना साकार हो सकती है। हमारे 'राष्ट्र—जागरण दीप महायज्ञ' का उद्देश्य भी यही होना चाहिए। मैं समझता हूँ, यही इसकी सही सार्थकता भी होगी। 'गायत्री—परिवार' के महामनीषी, वेदव्रती और तपोनिष्ठ कर्मयोगी आचार्य श्रीराम शर्मा जी का भी कथन है कि— ''आदमी को हम उदार बनाना चाहते हैं। आदमी को हम हृदयवान बनाना चाहते हैं। आदमी के भीतर हम सेवा—भक्ति बढ़ाना चाहते हैं। हर आदमी को समाजनिष्ठ बनाना चाहते हैं, जिससे कि वह एकाकी जीवन जीने और अपने ही सुख और सुविधाओं का विकास करने की अपेक्षा दूसरों के दुख को दूर करने में सहयोगी बन सकें, परोपकारी हो सके। हर मनुष्य

को समाज में जो पीड़ित हैं, अभिवंचित हैं–उनके प्रति सहयोग, संवेदना और सम्मान का भाव रखनेवाला होना चाहिए।''

आचार्य श्रीराम शर्मा जी आगे फिर कहते हैं –''दुर्लभ है मनुष्य का जीवन पाना। यदि यह संभव हो गया, तो दुर्लभ है–शिक्षित और विचारशील होना। यदि किसी को यह भी मिल गया, तो फिर दुर्लभ है–विज्ञान और अध्यात्म में एक साथ आस्थावान होकर अध्यात्म के प्रयोगों के लिए स्वयं को समर्पित करना। यदि कोई ऐसा निष्काम दिव्य जीवन जीने लगे, तो उसके स्वागत में न केवल देवदूत स्वर्ग का द्वार खोलते हैं, बल्कि परमात्मा भी स्वयं उसे एकाकार कर लेते हैं।''

हम भारतवासी पूरे विश्व का कल्याण चाहनेवाले लोग हैं। हम चिरजाग्रत राष्ट्र के लोग हैं। हम जब राष्ट्र–जागरण की बात करते है तो इसका मतलब आध्यात्मिक अभ्युदय से लिया जाना चाहिए।

भारत राष्ट्र की 'चिति' की व्याख्या करते हुए आदरणीय दीनदयाल उपाध्याय जी कहते हैं कि –''प्राचीन काल से लेकर आज तक चली आनेवाली राष्ट्र–पुरूषों की परम्परा के भीतर छिपे हुए सूत्र को यदि हम ढूँढे, तो संभवतया 'चिति' की अनुभूति हो सके।'' उनकी भी स्पष्ट मान्यता है कि 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया' का हमारा ध्येय ही हममे राष्ट्र की 'चिति' की अनुभूति कराता है। इसलिए, आइये, आज 'राष्ट्र–जागरण–दीप महायज्ञ' के पावन अवसर पर हम ऐसे दीप प्रज्वलित करने का संकल्प लें, जो सत्य पर आधारित हो, जिसमें तपस्या का तेल पड़ा हो तथा जिसमें दया रूपी बाती हो। ऐसे दीपक से जो दीप–शिखा निकलेगी, वह क्षमा की होगी और उससे विखरनेवाला प्रकाश हमारे बहिर्जगत् को प्रकाशित करने के साथ–साथ हमारे अंतर्मन को भी आलोकित करेगा–

''सत्याधारः तपः तैलम्, दया वर्त्तिः क्षमा शिखाः

अंधकारे प्रविष्टव्यो, दीपो यत्नेन वार्यताम्।''

आज इस महायज्ञ में शामिल होने का मुझे सौभाग्य मिला है। आपने काफी भव्य रूप में इसका सफल आयोजन किया है। दीपावली का त्योहार आने ही वाला है। मैं आप सबको 'दीपावली' की मंगलकामनाएँ देता हूँ। सबको बहुत–बहुत धन्यवाद!

जय हिन्द!!

****

प्रस्तुति–जन–सम्पर्क शाखा, राजभवन, पटना।